भारत छोड़ो आन्दोलन

कारण :-

① सविनय अवज्ञा आन्दोलन को छोड़े हुए लम्बा समय हो गया था तथा गाँधीजी की संघर्ष विराम संघर्ष की रणनीति के तहत एक नए जन आन्दोलन की आवश्यकता थी।

② भारतीय अगस्त प्रस्ताव तथा क्रिप्स मिशन से सन्तुष्ट नहीं थे।

③ व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन के कारण भारतीयों में राजनीतिक चेतना का विकास हो चुका था।

④ दूसरे विश्व युद्ध के कारण देश की परिस्थितियाँ असामान्य थी तथा भारतीयों में अंग्रेजों के खिलाफ असन्तोष था।

⑤ जापान SE एशिया में लगातार बढ़त लेता जा रहा था तथा उसने वर्मा पर भी अधिकार कर लिया था तथा अब उसका अगला निशाना भारत था।

वर्धा प्रस्ताव :- 14 July 1942.

→ गाँधीजी ने भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव रखा।

→ 8 Aug. को ग्वालिया टैंक मैदान (Bombay) से आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।

→ गाँधीजी ने अपना सुप्रसिद्ध 'करो या मरो' का भाषण दिया।

→ 9 Aug. को ऑपरेशन Zero over के तहत गाँधीजी तथा कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

* गाँधीजी को पूना के आगा खाँ महल में रखा गया तथा अन्य नेताओं को अहमदनगर के किले में रखा गया।

* कांग्रेस की दूसरी पंक्ति के नेताओं द्वारा आन्दोलन चलाया गया।

e.g. जयप्रकाश नारायण
रामममनोहर लोहिया
अच्युत पटवर्धन
मीनू मसानी → Male
अरूणा आसफ अली } महिला नेता
उषा मेहता }

* उषा मेहता ने बॉम्बे में भूमिगत रेडियो स्टेशन स्थापित किया।
• राम मनोहर लोहिया यहाँ से सम्बोधित करते थे।

→ देश में कई स्थानों पर समानान्तर सरकारों की स्थापना हुई।

e.g. ① बलिया (U.P.) : चीतू पाण्डे (प्रथम समानान्तर सरकार)
② सतारा (MH) : बाई. बी. चव्हाण, नानाजी पाटिल } सर्वाधिक समय तक चलने वाली समानान्तर सरकार
③ तामलुक (बंगाल) : सतीश सामन्त, मातंगिनी हाजरा (F) } जातीय सरकार
* इन्होंने विद्युत वाहिनी सेना का गठन किया था।

→ सरकारी इमारतों पर भारतीय झण्डा फहरा दिया गया।
→ सञ्चार तथा आवागमन के साधनों को बाधित किया गया।
→ आन्दोलन हिंसक हो गया।
→ अंग्रेजों ने हिंसा का आरोप गाँधीजी पर लगाया।
* गाँधीजी ने आरोपों के विरोध में 21 दिन की भूख हड़ताल की।
→ 1945 तक भारत छोड़ो आन्दोलन समाप्त हो गया।

महत्व –

① 1857 की क्रान्ति के बाद भारत का सबसे बड़ा जन आन्दोलन था।

② समाज के सभी वर्गों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया यहाँ तक कि पूँजीपति भी आन्दोलन में शामिल हुए।

③ यह पहला आन्दोलन था जो पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य के साथ किया गया।

④ हालांकि मुस्लिम लीग ने भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध किया था लेकिन फिर भी यह आन्दोलन साम्प्रदायिक नहीं हुए तथा स्थानीय स्तर पर मुस्लिमों ने आन्दोलन में भाग लिया।

⑤ अंग्रेजी साम्राज्य का इस्पाती ढाँचा टूट गया था। क्योंकि सेना, प्रशासन तथा पुलिस की सहानुभूति आन्दोलनकारियों के साथ थी।

⑥ इस आन्दोलन के बाद भारत की आजादी तय हो-चुकी थी तथा अब यह केवल समय का प्रश्न थी।

राजगोपालाचारी फॉर्मूला - 1944

प्रावधान :-

1. मुस्लिम लीग को राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस का समर्थन करना चाहिए।
2. मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में जनमत संग्रह करवाया जाएगा।
3. जनमत संग्रह से पहले सभी राजनीतिक दल अपनी विचारधारा का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं।
4. विभाजन की स्थिति में साझे संघ का गठन किया जाएगा जिसमें रक्षा, सञ्चार व विदेश एक साथ रखे जाएगें।
5. ये सभी प्रावधान अंग्रेजों के जाने के बाद लागू किए जाएगें।

→ कांग्रेस ने इन प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया।

→ गाँधीजी ने इसके लिए जिन्ना को मनाने की कोशिश की तथा जिन्ना को कायदे - आजम (Great leader) कहा लेकिन जिन्ना ने स्वीकार नहीं किया।

जिन्ना की माँगें :-

① जिन्ना ने साझे संघ को अस्वीकार कर दिया।

② पूर्वी तथा प. Pak. को मिलाने के लिए जिन्ना ने गलियारे की माँग की।

③ जनमत संग्रह में केवल मुस्लिमों की राय पूछी जानी चाहिए।

④ जनमत संग्रह से पहले केवल मुस्लिम लीग प्रचार कर सकती है।

⑤ जिन्ना ने अंग्रेजों से माँग की - "बाँटो तथा जाओ।"

<u>वेवेल प्लान</u> - 1945

→ लॉर्ड वेवेल उस समय भारत का GG था।

<u>प्रावधान</u> -

① GG तथा सेनाध्यक्ष को छोड़कर कार्यकारी परिषद् के सभी सदस्य भारतीय होंगे।

② कार्यकारी परिषद् सवर्ण हिन्दू तथा मुस्लिमों की संख्या समान होगी।

③ आगे की स्थिति पर चर्चा के लिए शिमला में सम्मेलन बुलाया जाएगा।

④ सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया जाएगा।

शिमला सम्मेलन - June, 1945.

→ इसमें 22 सदस्यों ने भाग लिया।

→ कांग्रेस का नेतृत्व मौलाना अबुल कलाम आजाद ने किया।

→ जिन्ना ने माँग की-कार्यकारी परिषद् के मुस्लिम सदस्य मुस्लिम लीग द्वारा चुने जाएगें।

→ जिन्ना की जिद के कारण शिमला सम्मेलन असफल हो गया।

→ मौलाना अबुल कलाम ने शिमला सम्मेलन को 'भारतीय इतिहास का जल विभाजक' बताया।

Breaking down Plan -

→ यह योजना भी G G वेवल द्वारा दी गई।

शर्तें -

① मार्च, 1948 तक भारत को आजाद कर दिया जाएगा।

② भारत को 2 चरणों में आजाद किया जाएगा -

(i) हिन्दू बाहुल्य प्रान्तों में

(ii) मुस्लिम बाहुल्य प्रान्तों में

शाही नौसेना विद्रोह - Feb. 1946

→ Bombay बन्दरगाह के नौसैनिकों ने खराब खाने को लेकर हड़ताल की।

→ B.C. दत्त नामक सैनिक ने N.S. तलवार नामक जहाज पर 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' लिख दिया।

* अंग्रेजों ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

→ यह आन्दोलन बॉम्बे से लेकर कराँची व मद्रास बन्दरगाह पर भी फैल गया।

→ 22 Feb. को मजदूरों ने नौसैनिकों के पक्ष में हड़ताल की।

→ 25 Feb. को पटेल तथा जिन्ना के समझाने पर नौसैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

आत्मसमर्पण के कारण -

(i) पटेल तथा जिन्ना जानते थे कि यह हड़ताल आजाद भारत में भी जारी रह सकती है।

(ii) अंग्रेजी सरकार हिंसा के माध्यम से आन्दोलन को कुचल सकती थी।

कैबिनेट मिशन / मंत्रीमण्डलीय योजना - 1946.

→ यह 3 सदस्यीय आयोग था -

(i) पैथिक लॉरेन्स (भारत सचिव)

(ii) स्टैफोर्ड क्रिप्स (बोर्ड ऑफ ट्रेड का अध्यक्ष)

(iii) A.B. अलेक्जेंडर (नौसेना प्रमुख)

प्रावधान -

① ब्रिटिश प्रान्तों तथा देशी रियासतों को मिलाकर अखिल भारतीय संघ बनाया जाएगा।

② भारत में संघात्मक व्यवस्था लागू की जाएगी।

* रक्षा, विदेश व सञ्चार केंद्र को दिए जाएगें तथा शेष शक्तियाँ प्रान्तों को दी जाएगीं।

③ संविधान सभा का गठन किया जाएगा।

④ पहले प्रान्तों का संविधान बनाया जाएगा तथा अन्त में केंद्रों का संविधान बनाया जाएगा।

⑤ धार्मिक मुद्दों पर विवाद की स्थिति में केंद्रीय विधानमण्डल के हिन्दू तथा मुस्लिम सदस्यों से अलग - अलग राय ली जाएगी।

⑥ ब्रिटिश प्रान्तों को 3 भागों में बाँटा जाएगा -

(a) हिन्दू बाहुल्य ब्रिटिश प्रान्त

(b) पश्चिमी मुस्लिम बाहुल्य प्रान्त (Punjab, Sindh)

(c) पूर्वी " " " (Assam, Bengal)

* प्रान्त चाहे तो अलग समूह भी बना सकते हैं।

⑦ अन्तरिम सरकार का गठन किया जाएगा।

⑧ Pak. की माँग अस्वीकार कर दी गई।

→ कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग दोनों ने कैबिनेट मिशन को स्वीकार कर लिया।

सकारात्मक प्रावधान -

(i) Pak. की माँग अस्वीकार कर दी। क्योंकि -

(a) पूर्वी. तथा W. Pak. के बीच भौगोलिक दूरी अधिक थी।

(b) देशी रियासतों की समस्याएँ

(c) संसाधनों के बँटवारे की समस्या

(d) गलियारा दिया जाना सम्भव नहीं था

(ii) अन्तरिम सरकार का गठन

नकारात्मक प्रावधान -

(i) संविधान के निर्माण की प्रक्रिया गलत थी।

(ii) कमजोर केंद्र का गठन

(iii) प्रान्त अपना समूह अलग बना सकते थे।

संविधान सभा का चुनाव

1946

संविधान सभा

389

ब्रिटिश भारत — 296

- प्रान्त — 292
- केंद्र शासित प्रदेश — 4

देशी रियासत — 93 (मनोनीत)

→ कांग्रेस ने 208 सीटों पर जीत प्राप्त की।

→ मुस्लिम लीग ने पृथक् निर्वाचन की 78 में से 73 सीट प्राप्त की।

→ मुस्लिम लीग संविधान सभा में अल्प मत में थी।

* इसीलिए इसने संविधान सभा को स्वीकार नहीं किया।

सीधी कार्यवाही दिवस - 16 Aug. 1946

* मुस्लिम लीग ने Pak. के लिए पूरे देश में साम्प्रदायिक दंगे करवा दिए।

→ JL नेहरू के नेतृत्व में अन्तरिम सरकार का गठन किया गया।

* मुस्लिम लीग के लियाकत अली को वित्त मंत्री बनाया गया।

* लियाकत अली ने अन्तरिम सरकार में हस्तक्षेप किया तथा वल्लभ भाई पटेल ने कहा था -

"यदि हमने एक Pak. नहीं दिया तो देश के प्रत्येक विभाग में Pak. बन जाएगा।"

एटली घोषणा - 20 Feb. 1947

→ एटली उस समय ब्रिटिश PM था।

घोषणाएँ -

(i) 30 June, 1948 तक भारत को आजाद कर दिया जाएगा।

(ii) वेवल के स्थान पर माउण्टबेटन को नया GG बनाया जाएगा।

बाल्कन योजना -

→ यह योजना माउण्टबेटन द्वारा दी गई।

→ इसके तहत भारत का विभाजन बाल्कन देशों की तरह किया जाएगा।

माउण्टबेटन योजना (डिकी बर्ड प्लान) - 3 June, 1947

① भारत व Pak. दो डोमिनियन स्टेट बनाए जाएगें।

② विभाजन के लिए बंगाल व पंजाब विधानसभा के हिन्दू तथा मुसलमान सदस्यों सन्यों से अलग - अलग राय ली जाएगी। यदि एक पक्ष भी सहमत होता है तो विभाजन कर दिया जाएगा।

③ NWFP तथा सिल्हट (Assam) में जनमत संग्रह करवाया जाएगा।

④ रेड क्लिफ की अध्यक्षता में सीमा आयोग का गठन किया जाएगा।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम - 18 July 1947

→ 4 जुलाई को इसे ब्रिटिश संसद में रखा गया तथा 18 July को स्वीकार कर लिया गया।

प्रावधान -

① 15 अगस्त, 1947 को 2 अलग डोमिनियन स्टेट बना दिए जाएगें।

② जब तक संविधान का निर्माण नहीं हो जाता है, 1935 के अधिनियम से शासन किया जाएगा।

③ जब तक चुनाव नहीं हो जाते हैं संविधान सभा संसद की तरह कार्य करेगी

④ देशी रियासतों से ब्रिटिश सर्वोच्चता समाप्त कर दी जाएगी।

⑤ ब्रिटिश क्राउन की कैसर-ए-हिन्द उपाधि हटा दी जाए।

क्रान्तिकारी आन्दोलन

क्रान्तिकारी आन्दोलन का पहला चरण -

I. महाराष्ट्र :-

① वासुदेव बलवन्त फडके -

→ 1870 के दशक में रामोसी जनजाति को लेकर आन्दोलन का नेतृत्व किया।

→ मुख्य केंद्र = बॉम्बे

→ उद्देश्य = हिन्दू राज्य की स्थापना

→ वासुदेव बलवन्त फडके को गिरफ्तार कर लिया गया। अतः दौलता रामोसी ने आन्दोलन का नेतृत्व किया।

★ चापेकर बन्धु - 22 June 1897

* दामोदर तथा बालकृष्ण ने रैंड तथा आयर्स्ट नाम के दो प्लेग अधिकारियों की हत्या कर दी।

* इन दोनों को फाँसी की सजा हुई।

* तिलक ने केसरी समाचार-पत्र में आपत्तिजनक लेख लिखा था। अतः तिलक को 18 महीने के लिए जेल भेजा गया।

③ विनायक दामोदर सावरकर (वीर सावरकर)

→ 1899 में नासिक में मित्र मेला नामक संगठन की स्थापना की।

→ 1904 में इसका नाम बदलकर अभिनव भारत कर दिया गया।

→ कालान्तर में सावरकर पढ़ने के लिए लन्दन चले गए।

→ इस संगठन के अनन्त लक्ष्मण करकरे ने नासिक के जज जैक्सन की हत्या कर दी।

* करकरे को फाँसी की सजा हुई।

II. <u>बंगाल</u> -

अनुशीलन समिति

मिदनापुर	कलकत्ता	ढाका
↓	↓	↓
ज्ञानेंद्र नाथ बसु	प्रमोद मित्रा	1. बारीद्र घोष 2. भूपेंद्र दत्त

→ समाचार पत्र = युगान्तर
सन्ध्या

→ हेमचंद्र कानूनगो को बम बनाना सीखने के लिए पैरिस भेजा गया (रूसी व्यक्ति से)

→ क्रान्तिकारियों ने माणिक तल्ला में बम बनाने का कारखाना लगाया।
(Calcutta)

→ खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी ने मुजफ्फरपुर के जज किंग्सफोर्ड को मारने का प्रयास किया लेकिन इस घटना में 2 कैनेडी महिलाएँ मारी गई।

* प्रफुल्ल चाकी ने पुलिस से बचने के लिए आत्महत्या कर ली।

* खुदीराम बोस को फाँसी की सजा की गई।

→ अंग्रेजों ने माणिक तल्ला से 35 क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार किया।

* इनमें अरविन्द घोष भी शामिल थे।

→ इसे 'अलीपुर षड्यंत्र मुकदमा' कहा जाता है।

→ नरेंद्र गोंसाई सरकारी गवाह बन गया था। अतः अन्य क्रान्तिकारियों ने उसकी हत्या कर दी।

→ अरविन्द घोष को सबूतों के अभाव में रिहा कर दिया गया।

→ कालान्तर में अरविन्द घोष पांडिचेरी चले गए तथा वहाँ पर एक आश्रम खोल लिया।

→ अरविन्द घोष की पुस्तकें = सावित्री
Life Divine ☆☆☆
Essays on Geeta
New Lamps for Old
↓
• इसमें नरमपन्थियों की आलोचना की।

→ बारीन्द्र घोष के समाचारपत्र = भवानी मन्दिर
वर्तमान रणनीति के नियम

2. <u>बाघा जतिन</u> -

→ 1915 में बालासोर (Odisha) में पुलिस मुठभेड़ में शहीद हो गए।

III. <u>पंजाब</u> -

मुख्य नेता = लाला लाजपत राय
अजीत सिंह
↓
• संगठन = अंजुमन (सभा) -ए- मोहब्बत -ए- वतन
• समाचारपत्र = भारत माता

→ कालान्तर में लाला लाजपत राय इंग्लैण्ड होते हुए अमेरिका चले गए।

IV. विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन

1. England -

① श्यामजी कृष्ण वर्मा :-

→ 1905 में लन्दन में Indian Homerule Society की स्थापना की।

→ सहयोगी = अब्दुल्ला सुहरावर्दी
मैडम भीखाजी कामा (भारतीय क्रान्ति की माता)
वीर सावरकर
मदन लाल धींगडा

→ मुख्यालय = India House

→ समाचारपत्र = Indian Sociologist

→ इस संगठन में ने 1907 में 1857 की क्रान्ति की स्वर्ण जयन्ती मनाई।

→ मदनलाल धींगडा ने कर्जन वाइली (भारत सचिव का राजनीतिक सलाहकार) की हत्या कर दी।

→ मदनलाल धींगडा को फाँसी की सजा हुई।

→ वीर सावरकर को आजीवन करावास दिया गया।

→ कालान्तर में 1915 में वीर सावरकर ने मदन मोहन मालवीय के साथ मिलकर हिन्दू महासभा की स्थापना की।

② मैडम भीखाजी कामा :-

→ यह दादाभाई नौरोजी की सचिव थी।

→ 1907 में स्टूटगार्ट (Germany) में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भाग लिया तथा वहाँ पर भारतीय झण्डा फहराया (विदेश में पहली बार)

2. <u>Canada</u> -

① वैंकूवर -

United India house

- तारकनाथ दास → Free Hindustan
- जी.डी. कुमार → स्वदेशी सेवक

News-paper

संगठन = स्वदेशी सेवक गृह

→ रामनाथ पुरी का समाचारपत्र = Circular-i-Hind

3. <u>USA</u> -

① सेन फ्रांसिस्को :-

युगान्तर आश्रम

- लाला हरदयाल → स्टेनफोर्ड वि.वि. में प्रोफेसर
- सोहन सिंह भाखना

→ 1 Nov. 1913 को इन्होंने गदर नामक समाचारपत्र प्रकाशित किया।
(गदर ↓ क्रान्ति)

* प्रारम्भ में यह समाचारपत्र उर्दु में प्रकाशित होता था लेकिन बाद में अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रकाशित किया गया।

* इसे पश्तो भाषा में भी प्रकाशित किया गया था।

* इस समाचारपत्र के कारण गदर आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।

→ गदर आन्दोलनकारी भारत आए तथा इन्होंने रासबिहारी बोस को अपना नेता बनाया।

→ 21 Feb. 1915 को पूरे भारत में एक साथ क्रान्ति की योजना बनाई गई।

लेकिन अंग्रेजों को योजना का पता चल गया।

* रासबिहारी बोस भाग गए।
* करतार सिंह सराबा (Punjab) तथा विष्णु पिंगले (Bengal) को फाँसी दी गई।
* भाई परमानन्द को आजीवन कारावास
* इसे प्रथम लाहौर षड्यंत्र मुकदमा कहा जाता है।

4. Afghanistan :-

→ रेशमी रूमाल षड्यंत्र - 1913

1. उबेदुल्ला सिन्धी (काबुल)
2. महमूद हसन (लाहौर)

राजा महेन्द्र प्रताप -

* प्रथम विश्व युद्ध के दौरान Afg. में अन्तरिम भारत सरकार की स्थापना की।
* इन्होंने वृन्दावन में प्रेम कॉलेज की स्थापना की।

क्रान्तिकारियों का योगदान -

① इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन की निष्क्रियता को तोड़ने का प्रयास किया।

② इनके व्यक्तिगत त्याग के कारण भारतीय युवा राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ा।

③ इनके कारण राष्ट्रीय आन्दोलन गाँव तक पहुँचा। क्योंकि ये क्रान्तिकारी गतिविधियों के बाद गाँव में शरण लेते थे।

④ इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन का विदेशों में प्रचार-प्रसार किया।

⑤ इनके दबाव के कारण अंग्रेजों को 1909 में सुधार करने पड़े।

⑥ इनके दबाव के कारण अंग्रेजों को बंगाल विभाजन रद्द करना पड़ा। [1911]

कमियाँ -

① इनके पास संगठन तथा रणनीति का, नेतृत्व का अभाव था।

② क्रान्तिकारी नरमपन्थी तथा गरमपन्थियों से सहयोग प्राप्त नहीं कर पाए।

③ इन्होंने धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग किया था। अतः मुस्लिम समुदाय को अपने साथ नहीं जोड़ पाए।

④ भारत में लोकप्रिय आन्दोलन के रूप में विकसित नहीं हो पाए।

⑤ अंग्रेजों को अधिक चुनौती प्रस्तुत नहीं कर पाए। इसीलिए अंग्रेजों ने आसानी से दमन कर दिया।

क्रान्तिकारी आन्दोलन का दूसरा चरण -

Hindustan Republican Association (HRA) -

स्थापना = कानपुर (1924)

संस्थापक = शचीन्द्र सान्याल → पुस्तक = बन्दी जीवन
वर्तमान रणनीति
भगवती चरण बोहरा
जोगेश चटर्जी → Philosophy of Bomb
रामप्रसाद बिस्मिल
चन्द्रशेखर आजाद

काकोरी षड्यंत्र मुकदमा - 9 Aug. 1925
(Lucknow)

* क्रान्तिकारियों ने सरकारी खजाना ले जा रही ट्रेन को लूट लिया था।
* इस मुकदमे में 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी की सजा दी गई -

(i) अशफाक उल्ला खाँ
(ii) रामप्रसाद बिस्मिल
(iii) रोशन सिंह
(iv) राजेन्द्र लाहिड़ी

Hindustan Socialist Republican Association - 1928

स्थापना = फिरोजशाह कोटला (दिल्ली)

संस्थापक = चन्द्रशेखर आजाद
भगत सिंह
सुखदेव
राजगुरु

→ 30 Oct. 1928 को साइमन कमीशन का विरोध कर रहे लालाजी की हत्या कर दी गई।

→ 17 Dec. 1928 को लालाजी की हत्या के जिम्मेदार सांडर्स को मार दिया गया।

→ 8 April 1929 को भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने संसद (केंद्रीय विधानमण्डल) की खाली सीटों पर बम फेंका।

* वे पब्लिक सेफ्टी बिल का विरोध कर रहे थे।

* दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।

* क्रान्तिकारियों ने जेल में भूख हड़ताल की।

* 64 दिन की भूख हड़ताल के बाद जतिनदास शहीद हो गए।

→ 27 Feb. 1931 को चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस मुठभेड़ में शहीद हो गए।

→ 23 March 1931 को सांडर्स हत्याकाण्ड में भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव को फाँसी दी गई।

★ इसे दूसरा लाहौर षड्यंत्र मुकदमा कहा जाता है।

→ भगत सिंह की आत्मकथा = मैं नास्तिक क्यों हूँ ?

→ भगत सिंह के संगठन = लाहौर छात्र संघ
नौजवान भारत सभा

महावीर सिंह चौधरी
विजय कुमार सिन्हा
किशोरी लाल
जयदेव
कमलनाथ तिवारी
शिव वर्मा
काया प्रसाद

चटगांव शस्त्रागार हमला - 18 April 1930
(Bangladesh) Armery Raid

→ यह हमला मास्टर सूर्यसेन के नेतृत्व में हुआ ।

→ ये चटगॉव के राष्ट्रीय विद्यालय में शिक्षक थे ।

→ इन्होंने कई संगठन स्थापित किए ।

e.g. ① Indian Republican Army

② विद्रोही संघ -

सहयोगी = अनन्त सिंह
गणेश घोष
लोकीनाथ बाउले
प्रीतिलता वाडेकर
कल्पना दत्त

* Railway workshop पर हमले के दौरान प्रीतिलता वाडेकर शहीद हो गई थी।

* सूर्यसेन तथा कल्पना दत्त को 1933 में गिरफ्तार कर लिया गया ।

* 1934 में सूर्यसेन को फॉसी की सजा हुई ।

→ 14 Dec. 1931 को शान्ति घोष तथा सुनीति चौधरी नामक 2 स्कूली छात्राओं ने कोमिल्ला के कलेक्टर को गोली मार दी ।

→ 6 Feb. 1932 को बीना दास ने कलकत्ता वि. वि. के दीक्षान्त समारोह में गवर्नर को गोली मार दी थी ।

क्रान्तिकारियों का योगदान -

① इन्होंने निष्क्रियता के दौर में भी राष्ट्रीय आन्दोलन को सक्रिय रखा।

② इनके व्यक्तिगत त्याग के कारण भारतीय युवा राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन का सामाजिक आधार बढ़ा।

③ इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को नया आयाम प्रदान किया तथा इसे समाजवादी विचारधारा से जोड़ा जिससे किसान तथा मजदूर राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े।

④ इन्होंने 'सम्पूर्ण क्रान्ति' का नारा दिया जिसके तहत राजनीतिक के साथ सामाजिक व आर्थिक आजादी की माँग की गई।

⑤ इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बनाए रखा।

⑥ महिलाएँ भी क्रान्तिकारी गतिविधियों में शामिल हुई जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला।

⑦ इनके कारण सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जन भागीदारी बढ़ी।

⑧ क्रान्तिकारियों के दबाव के कारण अंग्रेजों को गाँधीजी के साथ बराबरी का समझौता करना पड़ा।

⑨ 1935 में अंग्रेजों को सुधार करने पड़े।

प्रथम तथा द्वितीय चरण में अन्तर -

प्रथम चरण	द्वितीय चरण
① संगठन का अभाव था।	① कई संगठनों की स्थापना हुई। e.g. HRA, HSRA, IRA
② विचारधारा का अभाव था।	② इन्होंने समाजवाद पर बल दिया।
③ भविष्य की रणनीति का अभाव था।	③ इन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति का नारा दिया

④ धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग किया था।

⑤ महिलाओं की भागीदारी नहीं थी।

⑥ अधिक लोकप्रिय नहीं हो पाए।

④ इन्होंने धर्मनिरपेक्षता पर बल दिया।

⑤ महिलाओं ने क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया।

⑥ भारत में अत्यधिक लोकप्रिय हुए।

भारत में साम्यवादी आन्दोलन

→ बबूफ समाजवाद का जनक था।

→ कार्ल मार्क्स ने समाजवाद को साम्यवाद में बदल दिया था।

→ 1917 में रूस में लेनिन के नेतृत्व में साम्यवादी क्रान्ति हुई जिसे 'बोल्शेविक क्रान्ति' भी कहा जाता है। (लेनिन की पार्टी)

समाजवाद तथा साम्यवाद में अन्तर -

समाजवाद	साम्यवाद
① वर्ग सहयोग तथा वर्ग संघर्ष के माध्यम से व्यवस्था परिवर्तन किया जाना चाहिए।	① केवल वर्ग संघर्ष से ही व्यवस्था परिवर्तन होना चाहिए।
② लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास रखते हैं।	② तानाशाही में विश्वास रखते हैं।
③ राष्ट्रवाद में विश्वास करते हैं।	③ अन्तर्राष्ट्रीयवाद में विश्वास करते हैं।
④ धर्म को व्यक्तिगत विषय मानते हैं।	④ धर्म को अफीम के समान मानते हैं।

मानवेन्द्र नाथ रॉय -

→ 1920 में ताशकन्द में भारतीय साम्यवादी दल की स्थापना की।

* इस पार्टी की स्थापना लेनिन के परामर्श पर की गई थी।

सहयोगी = अवनी मुखर्जी
रोजा फीटीग्राफ
मुहम्मद अली
मुहम्मद शफीक

→ ये communist International में एकमात्र भारतीय सदस्य थे।

→ यह स्टालिन का सलाहकार / परामर्शदाता था।

→ पुस्तक = India in Transition

→ समाचारपत्र = Vanguard of Indian Independence
(Advanced Gaurd)

★★★

→ कालान्तर में 1940 में इन्होंने अतिवादी लोकतंत्र दल की स्थापना की।

सत्य भक्त -

→ 1925 में कानपुर में Communist party of India की स्थापना की।

* M.C. घाटे को इसका महासचिव बनाया गया।

अन्य साम्यवादी दल -

1. भारतीय बोल्शेविक दल – N. D. मजूमदार
2. साम्यवादी क्रान्तिकारी दल – सौमेन्द्र नाथ टैगोर
3. बोल्शेविक लेनिनिस्ट पार्टी – अजीत रॉय
   इन्द्रसेन
4. फॉरवर्ड ब्लॉक – सुभाष चन्द्र बोस

मुख्य साम्यवादी मुकदमे -

1. पेशावर षड्यंत्र मुकदमा - 1920

→ रूस से प्रशिक्षण प्राप्त करके आ रहे साम्यवादियों को पेशावर में गिरफ्तार कर लिया गया था।

2. कानपुर षड्यंत्र मुकदमा - 1924.

	मुख्य साम्यवादी	केंद्र	समाचारपत्र
(i)	श्रीपाद अमृत डांगे	Bombay	The Socialist
(ii)	मुजफ्फर अहमद	बंगाल	नवयुग
(iii)	गुलाम हुसैन	लाहौर	इंकलाब
(iv)	सिंगार वैली चेट्टियार	मद्रास	लेबर किसान गजट

→ श्रीपाद अमृत डांगे ने गाँधी बनाम लेनिन नामक पर्चा प्रकाशित किया।

→ मुजफ्फर अहमद ने कवि नजरूल इस्लाम के साथ मिलकर बंगाल नामक समाचारपत्र प्रकाशित किया था।

3. मेरठ षड्यंत्र मुकदमा - 1929.

→ इस मुकदमे में 31 साम्यवादियों को गिरफ्तार किया था जिनमें 3 अंग्रेज थे-

(i) फिलीप स्प्रेट
(ii) बेन ब्रेडले
(iii) लेस्टर हचिन्सन

→ प्रमुख वकील जिन्होंने इनका मुकदमा लड़ा -

(i) कैलाशनाथ काटजू
(ii) M.C. छाजला

(iii) H.F. अंसारी

(iv) J.L. नेहरू

→ गाँधीजी इन साम्यवादियों से मिलने के लिए जेल गए थे।

कांग्रेस समाजवादी दल -

→ स्थापना = 1934 (Bombay)

→ यह कांग्रेस के अन्दर एक दबाव समूह था।

→ मुख्य नेता = जयप्रकाश नारायण → पुस्तक = समाजवाद क्यों ?
आचार्य नरेन्द्र देव → " = समाजवाद तथा राष्ट्रीय आन्दोलन
राममनोहर लोहिया → " = भारत विभाजन के गुनहगार
मीनू मसानी
अशोक मेहता → 1947 में हिन्द मजदूर सभा की स्थापना की।

→ उद्देश्य = कांग्रेस की विचारधारा को समाजवाद की तरफ मोड़ना
युवाओं को साम्यवाद की तरफ जाने से रोकना
युवाओं के सामने साम्यवाद का विकल्प प्रस्तुत करना

साम्यवादी आन्दोलन के विभिन्न चरण -

→ भारत में साम्यवाद को लेकर 2 प्रकार की विचारधाराएँ थीं -

① लेनिन के अनुसार -

(i) साम्यवादियों को भारत में अंग्रेजों का विरोध करना चाहिए।

(ii) चूँकि राष्ट्रीय आन्दोलन की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस है। इसलिए साम्यवादियों को कांग्रेस का समर्थन करना चाहिए।

(iii) साम्यवादियों को किसानों तथा मजदूरों में राजनीतिक चेतना का विकास करना चाहिए।

② M.N. रॉय के अनुसार -

(i) कांग्रेस बुर्जुआ वर्ग की पार्टी है। इसलिए साम्यवादियों को अंग्रेजों के साथ-साथ कांग्रेस का भी विरोध करना चाहिए।

(ii) साम्यवादियों को भारत में अपनी पृथक् पहचान विकसित करनी चाहिए।

<u>प्रथम चरण</u> - 1920 - 29.

→ इसमें लेनिन की विचारधारा को अपनाया गया। इसलिए साम्यवादियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस का समर्थन किया।

→ यही कारण है कि JL नेहरू ने मेरठ के साम्यवादियों का मुकदमा लड़ा था तथा गाँधीजी उनसे मिलने के लिए जेल गए थे।

<u>द्वितीय चरण</u> - 1929 - 34.

→ इसमें MN रॉय की विचारधारा को अपनाया गया तथा कांग्रेस का विरोध किया गया।

→ साम्यवादियों ने गाँधी-इरविन समझौते को 'देश के साथ विश्वासघात' बताया तथा JL नेहरू तथा सुभाष चंद्र बोस को 'पूँजीवाद का एजेन्ट' घोषित किया।

→ अंग्रेजों ने कम्यूनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

<u>तृतीय चरण</u> - 1934 - 39.

→ प्रतिबन्ध से बचने के लिए साम्यवादी कांग्रेस में शामिल हो गए तथा कांग्रेस को साम्यवादी विचारधारा की तरफ मोड़ने का प्रयास किया।

→ साम्यवादियों ने कांग्रेस में JL नेहरू तथा सुभाष चंद्र बोस का समर्थन किया।

→ यही कारण है कि 1936-39 तक JL नेहरू तथा बोस कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

→ 1939 में त्रिपुरी अधिवेशन में गाँधीजी के विरोध के बावजूद बोस अध्यक्ष बन गए थे।

→ इसी दौरान अखिल भारतीय किसान सभा का गठन हुआ था।

→ कांग्रेस ने अपना कृषि कार्यक्रम जारी किया तथा योजना समिति का गठन किया गया था।

→ कांग्रेस ने प्रजामण्डल आन्दोलनों को समर्थन दिया ।

चतुर्थ चरण- 1939-45

→ प्रारम्भ में साम्यवादियों ने भारत छोड़ो आन्दोलन का समर्थन किया लेकिन जब हिटलर ने रूस पर आक्रमण कर दिया तथा रूस ब्रिटेन के साथ आ गया तो साम्यवादियों ने भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध किया तथा अंग्रेजों का समर्थन किया यहाँ तक कि साम्यवादी कई मुकदमों में सरकारी गवाह बन गए थे।

पञ्चम चरण- 1945-47.

→ साम्यवादियों ने कैबिनेट मिशन के सामने भाषा व संस्कृति के आधार पर भारत के 17 टुकड़ों की माँग की। अतः साम्यवादी भारत में अलोकप्रिय हो गए।

साम्यवादियों का योगदान -

① साम्यवादियों ने किसानों तथा मजदूरों में राजनीतिक चेतना का विकास किया था।

② इन्होंने किसानों तथा मजदूरों की समस्याओं को राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ा जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन का सामाजिक आधार बढ़ा।

③ साम्यवादियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन के उन रिक्त स्थानों को भरा जहाँ पर कांग्रेस नहीं पहुँच पाई।

④ इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप बरकरार रखा।

⑤ साम्यवादियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अनवरत सङ्घर्ष की नीति अपनाई।

⑥ क्रान्तिकारी समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे।
↓
भारतीय

साम्यवादियों की कमियाँ -

① भारतीय समाज साम्यवादी परिस्थितियों के अनुकूल नहीं था। क्योंकि शान्तिप्रिय समाज में हिंसा के माध्यम से व्यवस्था परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

② साम्यवादियों ने साम्यवाद को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाने का प्रयास नहीं किया तथा वे हमेशा रूस से प्रेरणा प्राप्त कर रहे थे।

③ अंग्रेजी नीतियों के कारण भारत में उद्योगों का विकास नहीं हुआ। अतः भारत में मजदूर वर्ग नहीं था तथा किसान अशिक्षित थे। अतः भारत में साम्यवाद केवल बौद्धिक वर्ग तक सीमित रह गया।

④ साम्यवादियों ने समय-समय पर कई गलत निर्णय लिए।

e.g. (i) कांग्रेस का विरोध

(ii) भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध

(iii) भारत के 17 विभाजन की माँग

(iv) भारतीय साम्यवादी आपस में सङ्गठित नहीं थे तथा सुयोग्य नेतृत्व का भी अभाव था।

आजाद हिन्द फौज

→ कैप्टन मोहन सिंह तथा निरंजन सिंह गिल ने 1942 में आजाद हिन्द फौज का गठन किया।

→ कालान्तर में रासबिहारी बोस को इसका नेता घोषित किया गया।

→ रासबिहारी बोस ने Indian Independence League की स्थापना की।

→ कालान्तर में सुभाषचंद्र बोस को आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व सौंपा गया।

→ आजाद हिन्द फौज के HQ = सिंगापुर
रंगून

→ सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में अन्तरिम भारत सरकार का गठन किया।

* जर्मनी, जापान, इटली द्वारा समर्थित

→ लक्ष्मी स्वामीनाथन आजाद हिन्द फौज की झाँसी रानी रेजीमेण्ट की प्रमुख थी।

→ बोस ने गाँधीजी को 'राष्ट्रपिता' कहा।

→ आजाद हिन्द फौज (INA) ने A&N द्वीपों पर कब्जा कर लिया तथा इनके नाम बदलकर शहीद द्वीप तथा स्वराज्य द्वीप कर दिए।

→ जापान के आत्मसमर्पण के कारण INA (Indian National Army) को पीछे हटना पड़ा।

→ रूस जाते समय ताइवान में विमान दुर्घटना में बोस की मृत्यु हो गई।

→ INA के अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया तथा लाल किले में उनके खिलाफ मुकदमा चलाया गया।

* प्रेम कुमार सहगल
शाहनवाज खान
गुरुबक्श सिंह ढिल्लो

→ भारत के प्रसिद्ध वकीलों ने इनका मुकदमा लड़ा

e.g. भूला भाई देसाई
कैलाशनाथ काटजू
तेज बहादुर सप्रू
JL नेहरू
आसफ अली

→ इन सभी INA अधिकारियों को मृत्युदण्ड दिया गया।

→ GG लॉर्ड वेवेल ने इन्हें क्षमा कर दिया।

★ सुभाष चंद्र बोस की पुस्तक = Indian Struggle
" " " " जीवनी = स्प्रिंगिंग टाइगर
* लेखक = ह्यू टोये

भारत में शिक्षा का विकास

→ वॉरेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता में अरबी-फारसी भाषाओं के लिए मदरसे की स्थापना की।

→ जॉनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।

→ 1906 में बड़ौदा रियासत ने अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू की।

शिक्षा पर सरकारी प्रस्ताव - 21 Feb. 1913.

प्रावधान :-

1. भारत में निरक्षरता कम करने का प्रयास किया जाएगा।
2. सभी प्रान्तों में वि.वि. की स्थापना की जाएगी।

सैंडलर आयोग - 1917.

→ इस आयोग में 2 भारतीय सदस्य थे - जियाउद्दीन अहमद
आशुतोष मुखर्जी

→ यह आयोग कलकत्ता वि.वि. के लिए बनाया गया था लेकिन बाद में इसकी सिफारिशें अन्य वि.वि. में भी लागू की गई।

→ प्रावधान :-

(i) वि.वि. में छात्रावास सुविधा होनी चाहिए।

(ii) स्कूली शिक्षा=12 वर्ष

(iii) स्नातक पाठ्यक्रम = 3 y

(iv) स्नातक में 2 प्रकार के पाठ्यक्रम होने चाहिए -

(a) साधारण पाठ्यक्रम

(b) प्रावीण्य "

(v) ढाका में वि.वि. की स्थापना की जानी चाहिए।

(vi) वि.वि. में महिला बोर्ड की स्थापना की जानी चाहिए।

हार्टोग समिति - 1929.

(i) ग्रामीण संस्कृति के बच्चों को मिडल स्कूल तक पढ़ाया जाना चाहिए तथा इसके बाद इन्हें रोजगार की शिक्षा दी जानी चाहिए।

(ii) वि.वि. में केवल योग्य विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाना चाहिए।

वर्धा योजना - 1937.

→ यह योजना गाँधीजी के हरिजन समाचार-पत्र के शिक्षा सम्बन्धी लेखों के आधार पर तैयार की गई थी।

→ इसका प्रारूप जाकिर हुसैन समिति द्वारा तैयार किया गया था।

→ प्रावधान :-

(i) 7-14 वर्ष तक के बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए।

(ii) इस योजना में हस्तउत्पादक कार्यों पर बल दिया जाता।

सार्जेंट योजना - 1944.

(i) प्राथमिक शिक्षा = 11 वर्ष (अनिवार्य)

(ii) माध्यमिक " = 11-17 वर्ष

* इसके 2 प्रकार - व्यावहारिक शिक्षा → रोजगार के लिए
साहित्यिक शिक्षा → वि.वि. में प्रवेश हेतु

राधाकृष्णन आयोग - 1948

← भारत में संवैधानिक विकास →

1773 का रेग्यूलेटिंग एक्ट :- Do it self.

1784 का पिट्स इण्डिया एक्ट :-

प्रावधान -

(i) GG की कार्यकारी परिषद् में सदस्यों की संख्या घटाकर 5 से 3 कर दी गई।

(ii) कम्पनी के राजनीतिक मामलों के लिए BOC का गठन किया गया।

* इसमें 6 सदस्य होते थे जिनमें 2 ब्रिटिश मंत्री होते थे।

विशेष अधिनियम - 1786

→ GG कॉर्नवॉलिस को वीटो पावर दिया गया।

1793 का चार्टर एक्ट :-

प्रावधान -

(i) BOC के खर्चे भारत सरकार द्वारा दिए जाएगें।

(ii) सभी GG के लिए वीटो पावर दिया गया।

1813 का चार्टर एक्ट :-

(i) ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया गया।

* कम्पनी को चाय व चीन के साथ व्यापार में एकाधिकार दिया गया।

(ii) भारत में शिक्षा के विकास के लिए 1 लाख रूपये दिए जाएगें।

(iii) ईसाई मिशनरीज़ अपने धर्म का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं।

1833 का चार्टर एक्ट -

(i) कम्पनी के व्यापारिक अधिकार समाप्त कर दिए।

(ii) अब कम्पनी एक पूर्णतया राजनीतिक इकाई बन गई।

(iii) बंगाल के GG को भारत का GG बना दिया गया।

(iv) मद्रास व Bombay के गवर्नर की कानून बनाने की शक्तियों को समाप्त कर दिया गया

(v) Do it Self.

1853 का चार्टर एक्ट :-

(i) COD के सदस्यों की संख्या घटाकर 24 से 18 कर दी गई।

(ii) GG की कार्यकारी परिषद् में विधि सदस्य को स्थायी कर दिया गया।

(iii) GG की कार्यकारी परिषद् में 6 अतिरिक्त सदस्य लिए जाएगें।
(कानून निर्माण में सहायता हेतु)

* ये बंगाल 1
मद्रास 1
Bombay 1
U.P. 1
SC का मुख्य न्यायाधीश
SC का अन्य "

* यहाँ से भारत की संसद का इतिहास प्रारम्भ होता है।

(iv) उच्च पदों के लिए लिखित परीक्षा का आयोजन किया जाएगा।
(इसके लिए 1854 में मैकाले समिति बनाई गई थी)

(v) कम्पनी का शासन भारत में अनिश्चित काल के लिए बढ़ा दिया गया।

1861 का भारत परिषद् अधिनियम -

(i) GG की कार्यकारी परिषद् में 1 सदस्य और जोड़ा गया।

(ii) कार्यकारी परिषद् के अतिरिक्त सदस्यों की संख्या बढ़ाई गई ।

min. = 6
max. = 12

↓
जो कुलीन भारतीय होते थे।

(iii) GG को वीटो तथा अध्यादेश की शक्तियाँ दी गई ।

(iv) मद्रास व Bombay के गवर्नर को कानून बनाने की शक्तियाँ पुन: दी गई।

(v) विभागीय व्यवस्था (मंत्रीमण्डलीय व्यवस्था) की शुरुआत की गई ।

1892 का भारत परिषद् अधिनियम -

(i) GG की कार्यकारी परिषद् में 1 सदस्य और बढ़ा दिया गया (कुल = 1+7)

(ii) अतिरिक्त सदस्यों की संख्या भी बढ़ाई गई -

min. = 10
max. = 16

(iii) इनका अप्रत्यक्ष निर्वाचन व्यापार बोर्ड के सदस्यों, नगर निगम तथा सीनेट द्वारा किया जाता था।

लेकिन चुनाव शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया था।

(iv) अतिरिक्त सदस्यों को प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया।

(v) यह बजट पर बहस भी कर सकते थे ।

← भारत में किसान आन्दोलन →

नील आन्दोलन -

→ यह आन्दोलन ददनी प्रथा के खिलाफ किया गया था।

ददनी प्रथा - अंग्रेज भारतीय किसानों को अग्रिम रकम देकर नील की खेती करवाते थे।

→ यह आन्दोलन 1857 की क्रान्ति के ठीक बाद प्रारम्भ हो गया था।

→ नेता :- दिगम्बर विश्वास
विष्णु विश्वास

→ हरिश्चंद्र मुखर्जी ने हिन्दू पेट्रियट नामक समाचारपत्र में इस आन्दोलन की खबरें प्रकाशित की।

→ ईसाई मिशनरियों ने किसानों का समर्थन किया।

→ 1860 में नील आयोग का गठन किया गया तथा 1862 के अधिनियम-5 द्वारा नील की खेती की अनिवार्यता समाप्त कर दी गई।

→

writer	नाटक
दीनबन्धु मित्र	नील दर्पण
माइकल मधुसूदन दत्त	Blue mirror

→ यह आन्दोलन डिप्टी मजिस्ट्रेट हेमचन्द्रावरकर की गलती के कारण प्रारम्भ हुआ था।

पाबना विद्रोह (1873-76)

→ यह आन्दोलन जमींदारों के खिलाफ किया गया था। क्योंकि जमींदार समय-समय पर भू-राजस्व बढ़ा दिया करते थे।

→ किसानों ने युसुफ सराय किसान संघ का गठन किया।

→ यह एक कानूनी तथा अहिंसक आन्दोलन था।

→ इस आन्दोलन में अधिकतर किसान मुस्लिम थे जबकि जमींदार हिन्दू थे परन्तु यह आन्दोलन साम्प्रदायिक नहीं हुआ।

→ किसानों ने माँग की -
"हम महामहिम महारानी के रैय्यत बनना चाहते हैं।"

→ नेता = शम्भू पाल
ईशान चन्द्र रॉय

→ बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर कैम्पबेल ने किसानों का समर्थन किया।

→ बंगाल के बुद्धिजीवियों ने भी किसानों का समर्थन किया था।

e.g. बंकिम नाथ चटर्जी
सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
आनन्द मोहन बोस

दक्कन विद्रोह - 1879 (1875-79).

→ यह आन्दोलन साहूकारों के खिलाफ किया गया था।

→ यह आन्दोलन करडाह (Puna) नामक स्थान से प्रारम्भ हुआ तथा सूपा (कृषि मण्डी) में हिंसक हो गया था (12 May 1875)

→ किसानों ने ~~जमींदारों~~ साहूकारों के ऋणपत्र जला दिए थे तथा ~~जमींदारों~~ साहूकारों का सामाजिक बहिष्कार किया गया।

→ 1879 में दक्कन अकाल राहत अधिनियम पारित हुआ तथा इसके बाद आन्दोलन समाप्त हो गया।

कूका आन्दोलन - 1875.

→ यह आन्दोलन पंजाब में नामधारी सम्प्रदाय द्वारा किया गया।

→ नेता = भगत जवाहरमल (सियान साहिब)
बालक सिंह

→ प्रारम्भ में यह आन्दोलन कृषि सम्बन्धी समस्याओं के खिलाफ था लेकिन बाद में असहयोग आन्दोलन बन गया था।

→ कालान्तर में रामसिंह कूका ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया।

* 1875 में इसे गिरफ्तार करके रंगून भेज दिया गया।
* टैनासिरम (बर्मा) में इसकी समाधि है।

→ 2007 में इस आन्दोलन को 150 वर्ष पूरे हुए थे। अत: भारत सरकार ने इसकी याद में 100 ₹ तथा 5 ₹ का सिक्का जारी किया।

→ इस आन्दोलन के दौरान समाजसुधार के प्रयास भी किए गए।

रम्पा विद्रोह - (1879-1922).

→ रम्पा A.P. की जनजाति है।

→ इन्होंने जमींदारों के खिलाफ आन्दोलन किया था।

→ नेता = अल्लूरी सीताराम राजू
↓
कालान्तर में गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन में भी भाग लिया था।

→ इस आन्दोलन की जाँच के लिए सुलिवन आयोग बनाया गया था।

किसान = मुट्टा
जमींदार = मुट्टादार

ताना भगत आन्दोलन - 1914.

→ 1914 में बिहार में उरांव जनजाति द्वारा चौकीदारी कर के विरुद्ध किया गया था।

→ नेता = जतरा भगत

तेभागा आन्दोलन - 1946.

→ 1946 में किसानों ने 1/3 भू-राजस्व के लिए यह आन्दोलन किया था।
क्योंकि फ्लाउड कमीशन ने 1/3 भू-राजस्व निर्धारित किया था।

→ नेता = कम्पाराम सिंह
गुवन सिंह

एका आन्दोलन (1920-22)

→ यह आन्दोलन असहयोग आन्दोलन का भाग था।

→ मुख्य क्षेत्र = सीतापुर
हरदोई
बहराईच
बाराबांकी

→ यह आन्दोलन जमींदारों के खिलाफ था।

→ यह हिंसक हो गया था।

→ मुख्य नेता = मदारी पासी
सहदेव

मोपला विद्रोह (1920-22).

→ यह असहयोग आन्दोलन का भाग था।

→ मालाबार तट के मोपला मुस्लिम किसानों द्वारा नम्बूदरीपाद ब्राह्मण जमींदार के खिलाफ आन्दोलन किया गया था।

→ यह हिंसक तथा साम्प्रदायिक हो गया था।

→ ब्राह्मण जमींदारों का जबरदस्ती धर्मांतरण करवाया गया।

→ मुख्य नेता = अली मुसलियार

→ कालान्तर में आर्य समाज ने यहाँ पर शुद्धि आन्दोलन चलाया था।

बारदोली आन्दोलन - 1927.

→ अंग्रेजों ने 30 % भू-राजस्व बढ़ा दिया था। अतः कुनबी पाटीदार किसानों तथा कालीपराज जनजाति द्वारा यह आन्दोलन किया गया।

→ नेता = कुंवर जी मेहता
कल्याण जी मेहता

→ अंग्रेजों ने भू-राजस्व वृद्धि को घटाकर 21.9 % कर दिया।

→ अब पटेल ने आन्दोलन का नेतृत्व किया।

→ गाँधीजी भी आन्दोलन के साथ जुड़ गए।

→ सरकार ने मैक्सवेल तथा ब्रूमफील्ड की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया।

→ कालान्तर में भू-राजस्व वृद्धि को घटाकर 6.03 % कर दिया।

→ बारदोली आन्दोलन की महिलाओं ने पटेल को 'सरदार' की उपाधि दी।

→ गाँधीजी ने बारदोली सत्याग्रह को स्वराज के संघर्ष से भी अधिक महत्वपूर्ण बताया था।

→ गाँधीजी ने कालीपराज जनजाति को रानीपराज कहा था।

11. UP किसान सभा :- 1918

→ नेता = गौरीशंकर मिश्र
इन्द्र नारायण द्विवेदी
महामना मदनमोहन मालवीय

→

12. अवध किसान सभा :- 1920

→ संस्थापक = दुर्गपाल सिंह
झिंगुरी पाल सिंह
माता बदल पाण्डे
केदारनाथ
JL नेहरू

→ मुख्य केंद्र = प्रतापगढ़ (UP)

→ यहाँ पर नाई-धोबी बन्द किया गया था।

13. बिहार किसान सभा - 1923

→ संस्थापक = सहजानन्द सरस्वती

→ इन्होंने बकाश्त भूमि आन्दोलन चलाया था।

↓

यदि कोई किसान भू-राजस्व जमा नहीं करवाता था
तो जमींदार उसकी जमीन जब्त कर लिया करते थे।

14. बंगाल कृषक पार्टी - 1929.

→ संस्थापक = फजल उल हक

15. उत्कल किसान सभा - 1935.

→ संस्थापक = मालती चौधरी

16. आंध्र रैय्यत सभा - 1928.

→ संस्थापक = N.G. रंगा

17. अखिल भारतीय किसान सभा - 1936

→ संस्थापक = सहजानन्द सरस्वती
N.G. रंगा

→ स्थापना = लखनऊ

→ प्रथम अधिवेशन = फैजपुर (1937)

* अध्यक्ष = N.G. रंगा

↓

निदुबोल में किसान स्कूल के स्थापना की गई थी।

→ इन्दुलाल याग्निक का समाचारपत्र = किसान बुलेटिन

भारत में साम्प्रदायिकता

→ प्राचीनकाल से ही भारत में विभिन्न धर्मों के लोग रहते आए थे लेकिन किसी भी धार्मिक प्रसङ्ग को लेकर कोई विवाद नहीं रहा।

→ लेकिन अंग्रेजों के आने के बाद स्थिति बदल गई थी, उन्होंने अपना शासन स्थापित करने के लिए 'फूट डालो, राज करो' की नीति अपनाई।

→ साम्प्रदायिकता बुद्धिजीवी वर्ग के दिमाग की उपज है तथा जनसाधारण उसका वाहक बन जाता है।

→ साम्प्रदायिकता में पहले यह स्थापित किया जाता है कि एक समुदाय दूसरे समुदाय से अलग है, इसके बाद व्यक्ति अपने समुदाय को श्रेष्ठ मानने लग जाता है तथा दोनों समुदायों के हितों में विरोधाभास मानने लग जाता है।

→ यह वातावरण अन्त में द्वेष, घृणा तथा नफरत में बदल जाता है।

भारत में साम्प्रदायिकता के कारण -

① अंग्रेजों की नीतियाँ :-

(a) इतिहास का पुनर्लेखन -

→ अंग्रेजी इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को 3 भागों में बाँटा -

(i) प्राचीन काल ⇒ हिन्दू काल

(ii) मध्यकाल ⇒ मुस्लिम काल

(iii) आधुनिक काल ⇒ ब्रिटिश काल

→ अंग्रेजों के अनुसार प्राचीन काल में भारतीय आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे तथा उनकी भौतिकवाद में विशेष रुचि नहीं थी। वे जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना चाहते थे तथा अपने परलोक को सुधारना चाहते थे। इस कारण उन्होंने राजनीतिक विषयों पर भी ध्यान नहीं दिया तथा निरङ्कुश शासन के आदी रहे।

→ अंग्रेजों ने मध्यकाल को मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार का काल कहा तथा यह स्थापित किया कि अंग्रेजों ने हिन्दुओं को मुसलमानों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाई है।

→ उन्होंने मध्यकाल को अन्धकार का काल कहा तथा लिखा कि अंग्रेज ही भारतीयों को आधुनिक काल में लेकर आए हैं।

→ इस प्रकार अंग्रेजों ने इतिहास को हिन्दू व मुस्लिमकाल में बाँटकर दोनों समुदायों को आपस में लड़ाने की कोशिश की।

(b) बंगाल विभाजन

(c) मुस्लिम लीग की स्थापना

(d) पृथक् निर्वाचन

(e) भारतीय समाज के अन्तर्विरोधों को साम्प्रदायिक रूप देना

e.g. किसान v/s जमींदार
पूँजीपति v/s मजदूर

(f) रोजगार के अवसरों को प्रतिस्पर्धी बना देना

(g) संयुक्त प्रान्त में अंग्रेजों ने उर्दु के स्थान पर देवनागरी लागू कर दी।

② <u>धर्म सुधार आन्दोलन</u> -

→ इसके दौरान सभी समाज सुधारकों ने केवल अपने-अपने धर्म की वकालत की।

e.g. आर्य समाज का शुद्धि आन्दोलन
वहाबियों के दारुल इस्लाम की अवधारणा

③ राष्ट्रीय आन्दोलन में तिलक द्वारा शिवाजी व गणेश महोत्सव प्रारम्भ किए गए, भारत माता का मानवीयकरण किया गया, राणा प्रताप

तथा शिवाजी को राष्ट्रीय नायकों की तरह प्रस्तुत किया गया, अकबर व औरंगजेब को आक्रान्ता बताया गया।

* इससे दोनों समुदायों के बीच दूरियाँ बढ़ी।

⑷ सर सैय्यद अहमद खाँ जैसे लोगों ने हिन्दू व मुस्लिमों के हितों में टकराव बताकर इन्हें दो अलग-अलग देश कहा।

⑸ हिन्दू महासभा तथा RSS जैसे हिन्दू प्रतिक्रियावादी सङ्गठनों ने हिन्दू हितों को अधिक प्राथमिकता देना प्रारम्भ किया था जिससे समाज में तनाव की स्थिति आई।

<u>विभिन्न चरण</u> -

→ 1857 की क्रान्ति के बाद अंग्रेजों ने हिन्दुओं को संरक्षण प्रदान किया तथा मुस्लिमों को दूर रखा लेकिन कालान्तर में कांग्रेस की स्थापना तथा सर सैय्यद अहमद खाँ के प्रयासों के कारण अंग्रेजों ने मुस्लिम हितों को प्राथमिकता देनी प्रारम्भ की।

<u>प्रथम चरण (1901-10)</u>

→ 20 th सदी का प्रथम दशक भारत में साम्प्रदायिकता के उदय का काल था।

→ इसमें अंग्रेजों द्वारा अपनी 'फूट डालो व राज करो' नीति के तहत -

(i) बंगाल विभाजन कर हिन्दुओं व मुसलमानों को लड़ाने का कार्य किया।

(ii) मुस्लिम लीग की स्थापना कर उसे कांग्रेस के विरोध में खड़ा किया।

(iii) पृथक् निर्वाचन के माध्यम से दोनों समुदायों को और पृथक् कर दिया।

दूसरा चरण (1910 - 22)

→ इस चरण में समझौतावादी रुख देखने को मिलता है।
→ लीग द्वारा 1913 में स्वराज का प्रस्ताव पारित किया गया।
→ 1916 के लखनऊ समझौते में कांग्रेस व लीग एक-दूसरे के साथ आई।
→ यही कारण है कि कांग्रेस द्वारा खिलाफत आन्दोलन को समर्थन दिया गया तथा असहयोग आन्दोलन में मुस्लिमों की बड़ी संख्या राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जुड़ी।

तीसरा चरण (1922 - 29)

→ इस चरण में दोनों ही विचारधाराएँ देखने को मिलती हैं जहाँ एक-एतरफ हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल दिया जा रहा था वहीं दूसरी तरफ पृथकतावादी नीतियाँ लगातार बढ़ती जा रही थीं।

e.g. ① गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया जाता था।
② स्वराज पार्टी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्रयास किए थे।
③ वामपंथियों ने भारत में धर्मनिरपेक्षता को और अधिक मजबूत किया।
④ क्रान्तिकारियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को उभारा।
⑤ जिन्ना के नेतृत्व में लीग का उदारवादी गुट हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थक था।

→ जबकि -
① 1920-21 में केरल के मालाबार तट पर हुआ मोपला विद्रोह जो प्रारम्भ में किसान व जमींदारों के बीच का संघर्ष था, ने बाद में साम्प्रदायिक रूप धारण कर लिया था।

② 1920-25 में दिल्ली में बड़ी संख्या में साम्प्रदायिक दंगे हुए।

③ आर्य समाज के स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती की अब्दुल रशीद ने हत्या कर दी।

④ 1925 में Dr. बलीराम केशवराम हेगड़ेवार ने RSS की स्थापना की जो हिन्दू प्रतिक्रियावादी सङ्गठन था।

चतुर्थ चरण (1929-37)

→ 1930 में कवि इकबाल ने प्रथम बार अलग मुस्लिम देश की माँग की जिसे 1933 में चौधरी रहमत अली ने Pak. नाम दिया।

→ 1937 के चुनाव में साम्प्रदायिकता और बढ़ गई थी।

* चुनाव से पूर्व UP में कांग्रेस व लीग का गठबन्धन था लेकिन बाद में कांग्रेस ने लीग को सरकार में शामिल नहीं किया गया था।

* लीग ने आरोप लगाया कि कांग्रेस शासित राज्यों में मुस्लिमों पर अत्याचार होते हैं तथा इसकी जाँच के लिए शरीफ समिति व पीरपुर समिति का गठन किया।

अन्तिम चरण (1937-47)

→ 1939 में जब कांग्रेस ने प्रान्तीय सरकारों से इस्तीफे दिए तो लीग द्वारा इसे मुक्ति दिवस के रूप में मनाया गया।

→ भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान लीग द्वारा कांग्रेस का विरोध किया गया।

→ संविधान सभा के चुनाव में जब लीग को अपेक्षाकृत कम सीटें मिली तो लीग ने देश में दंगे करवा दिए तथा 16 Aug. 1946 को सीधी कार्यवाही दिवस के रूप में मनाया गया।

इन सब कारणों से अन्ततः सदियों से साथ रहते आए दो समुदायों को भारत व Pak. नामक दो देशों के रूप में विभाजित कर दिया गया।

विभाजन के दौरान हुई हिंसा तथा मानवता का विस्थापन इसी बढ़ी हुई साम्प्रदायिकता का परिणाम था जिसने सामाजिक ताने-बाने को बिखेरकर रख दिया था।

अंग्रेजों की भारत में आर्थिक नीतियाँ -

① कुटीर उद्योग-धन्धों का पतन :-

→ 18 वीं शताब्दी का काल भारत में कुटीर उद्योग धन्धों के पतन का काल था। इस दौरान अंग्रेजों द्वारा ऐसी नीतियाँ अपनाई गईं कि भारत में अनौद्योगीकीकरण हुआ।

पतन के कारण -

(i) कच्चे माल पर अंग्रेजों द्वारा अधिकार कर लिया गया तथा उसे ब्रिटेन के उद्योगों के लिए भेजा जाने लगा।

* इससे भारत में कच्चा माल महँगा हो गया तथा उससे निर्मित सामान की लागत अधिक आने लगी।

* इससे कुटीर उद्योग-धन्धों का पतन हुआ।

(ii) ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा अपने राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए भारतीय कारीगरों से जबरदस्ती कार्य करवाया जाता था तथा उन्हें उचित मूल्य नहीं दिया जाता था। इससे परेशान कई बुनकरों ने अपने अँगूठे कटवा लिए थे।

(iii) भारतीय उद्योग-धन्धे अभी भी परम्परागत तकनीकों का सहारा ले रहे थे जबकि यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के कारण नई तकनीक आ गई थी। अतः यूरोपीय उद्योगों का सामान लागत व गुणवत्ता की दृष्टि से लाभदायक होता था।

(iv) भारतीय राजा-महाराजा कुटीर उद्योगों में बनने वाले सामान के उपभोक्ता थे लेकिन अंग्रेजों के आने के बाद भारतीय शासक वर्ग का पतन हो गया था। अतः अब इस सामान का कोई खरीददार नहीं बचा।

(v) भारतीय उच्च वर्ग इस सामान का उपभोक्ता हो सकता था जिससे कुटीर उद्योगों का विकास होता लेकिन उनमें भी अंग्रेजी संस्कृति का प्रसार होने के कारण यूरोपीय वस्तुओं की माँग होने लगी।

(vi) अंग्रेजों द्वारा भारतीय उद्योग धन्धों को संरक्षण नहीं दिया गया इसके उलट ऐसी नीतियाँ बनाई गई जिससे भारतीय उद्योग-धन्धे समाप्त हो जाएँ।

<u>परिणाम</u> -

(i) कुटीर उद्योग धन्धों का पतन होने से बेरोजगारी बढ़ी तथा लोगों ने गाँव की तरफ पलायन किया जिससे भूमि पर निर्भरता बढ़ी तथा भूमि की उपलब्धता कम होने लगी जिससे भूमिहीनों की एक नई समस्या सामने आई।

(ii) भूमि की कीमतें बढ़ने के कारण साहूकारों ने भूमि में निवेश करना प्रारम्भ किया जिससे ग्रामीण जीवन में साहूकारों का हस्तक्षेप बढ़ गया था।

(iii) भूमि में निवेश अधिक होने के कारण उत्पादन कार्यों में निवेश कम होने लगा।

(iv) उत्पादन कार्यों में कम निवेश के कारण आधुनिक उद्योग धन्धे स्थापित नहीं हो पाए इससे गरीबी व बेरोजगारी की समस्या और बढ़ी।

→ अब भारत एक औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था बन कर रह गया था जो कच्चे माल का निर्यातक तथा तैयार माल का उपभोक्ता था।

② धन का निष्कासन -

→ यह सिद्धान्त सबसे पहले दादाभाई नौरोजी द्वारा दिया गया था।

→ 1867 में ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन के अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी ने England's debt to India नामक पर्चा प्रकाशित कर धन के निष्कासन सिद्धान्त के बारे में बताया।

→ अन्य पुस्तकें :- Poverty and unbritish rule in India
Wants and means of India
On the commerce of India

→ इन्होंने प्रथम बार भारतीयों में प्रति व्यक्ति आय का ब्यौरा दिया (20 ₹ / व्यक्ति / वर्ष)

→ R.C. दत्त ने अपनी पुस्तक The Economic History of India में इस सिद्धान्त को बताया।

→ कांग्रेस ने 1896 के कलकत्ता अधिवेशन में इस सिद्धान्त पर चर्चा की।

→ गोपाल कृष्ण गोखले ने Imperial Legislative Assembly में इस मुद्दे को उठाया।

→ इस सिद्धान्त का अर्थ है कि अंग्रेजों द्वारा जो धन भारत से ब्रिटेन भेजा जाता था उसका भारतीयों को कोई लाभ नहीं मिलता था। अर्थात् धन का एक पक्षीय प्रवाह हो रहा था।

धन के निष्कासन के विभिन्न रूप -

(i) गृह व्यय :-

→ COD तथा BOC के सभी खर्चे भारत से भेजे जाते थे तथा 1857 की क्रान्ति के बाद India House के सभी खर्चे भारत से लन्दन भेजे जाते थे।

→ ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शेयरधारकों को लाभांश वितरित किया जाता था।

→ कम्पनी के विदेशी कर्जे का भारतीय राजकोष से भुगतान किया जाता था।

→ ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा ब्रिटिश सरकार के वे कर्मचारी जो भारत में काम करते थे उन्हें वेतन व पेंशन भारतीय राजकोष से दिए जाते थे।

→ सभी प्रकार के सैनिक व गैर-सैनिक खर्चे भारतीय राजकोष द्वारा दिए जाते थे।

* अंग्रेजों ने भारतीय खर्चे पर एक बड़ी सेना का गठन कर रखा था जो साम्राज्य के हितों के लिए कार्य करती थी।

→ भारत सरकार के लिए सभी प्रकार का सामान ब्रिटेन से मँगाया जाता था।

(ii) भारत में निवेश करने वाले निवेशकों को घाटे का भुगतान किया जाता था तथा उन्हें ब्याज का भी भुगतान किया जाता था।

e.g. Railway

(iii) कम्पनी के कर्मचारी भारत में व्यक्तिगत रूप से व्यापार करते थे तथा 1813 के बाद अन्य कम्पनियों को भी भारत में व्यापार की छूट दी गई। अतः धन का निष्कासन और तेज गति से बढ़ा।

(iv) भारतीय राजा-महाराजा तथा नबाबों द्वारा अंग्रेज अफसरों को उपहार दिए जाते थे।

* दादाभाई नौरोजी ने धन के निष्कासन को 'अनिष्टों का अनिष्ट' कहा था। (1867 के सम्मेलन में)

<u>दुष्परिणाम</u> -

① धन निष्कासन से भारत में पूँजी निर्माण नहीं हो पाया जिससे बचत की कमी हो गई तथा इससे उद्योग-धन्धों में निवेश नहीं हो पाया।

② अंग्रेजों ने अधिक धन कमाने के लिए भारतीयों का अधिक आर्थिक शोषण किया।

* इसके लिए भू-राजस्व में वृद्धि की जाती जिससे कृषि का विकास नहीं हो पाया

③ भारत में गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, अकाल जैसी समस्याएँ उत्पन्न होने लगीं।

④ भारतीय धन ने ही इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति को सम्भव बनाया तथा इसके परिणामस्वरूप भारत में कुटीर उद्योग धन्धों का पतन हो गया।

③ <u>कृषि का वाणिज्यीकरण</u> -

→ अंग्रेजों के आने से पहले भारतीय गाँव आत्मनिर्भर होते थे। किसानों द्वारा खाद्यान्न फसलों का उत्पादन किया जाता था लेकिन अंग्रेजों के आने के बाद इस स्थिति में परिवर्तन आया। इसके निम्न कारण थे-

(i) भू-राजस्व की ऊँची दर

(ii) भू-राजस्व की कठोर वसूली

(iii) भू-राजस्व को नकदी के रूप में लेना

→ अंग्रेजों के आने से पहले भू-राजस्व खाद्यान्न के रूप में लिया जाता था लेकिन अंग्रेजों ने इसे नकदी में लेना शुरु किया। अत: किसान ऐसी फसलों का उत्पादन करने लगे जो बाजार में जल्दी से जल्दी बिक सके।

e.g. चाय
कॉफी
गन्ना
कपास
नील

→ इसे ही कृषि का वाणिज्यीकरण कहा जाता है।

प्रभाव -

-ve

(i) खाद्यान्न फसलों की कमी होने से देश में भुखमरी की समस्या उत्पन्न हो गई।

(ii) नकदी फसलें भूमि की उत्पादकता के लिए अधिक लाभदायक नहीं थी। अत: सूखा व अकाल जैसी समस्याएँ आने लगीं।

(iii) भू-राजस्व नकदी में लिए जाने से महाजनी प्रथा को बढ़ावा मिला।

(iv) भारतीय कृषि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार से जुड़ गई थी। अत: अब उसे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के उतार-चढ़ाव को झेलना पड़ता था।

(v) अंग्रेजों ने कृषि में तकनीक लाने का प्रयास नहीं किया, कृषि अनुसन्धानों को बढ़ावा नहीं दिया गया तथा कृषि को वित्तीय सहायता उपलब्ध नहीं करवाई गई।

+ve

(i) भारतीय किसान मण्डियों से जुड़े जिससे उनमें राजनीतिक चेतना का विकास हुआ तथा यह राजनैतिक चेतना गाँव तक पहुँची।

अंग्रेजों की आर्थिक नीति के विभिन्न चरण -

→ रंजनी पाम दत्त ने अपनी पुस्तक India Today में अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों को 3 भागों में बाँटा-

(i) वाणिज्यवादी साम्राज्यवाद (1764-1813)

(ii) मुक्त व्यापार नीति (1813-58)

(iii) वित्तीय साम्राज्यवाद (1858-1947)

(i) वाणिज्यवादी साम्राज्यवादी -

→ इस चरण में अन्य यूरोपीय कम्पनियों को भारत में आने से रोका गया तथा भारतीय व्यापारियों के अधिकार सीमित कर दिए गए।

→ ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपने राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल किया तथा भारत के कच्चे माल पर अपना कब्जा कर लिया ताकि इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति को गति मिल सके।

(ii) <u>मुक्त व्यापार की नीति</u> -

→ 1813 तक औद्योगिक क्रान्ति अपने चरम पर पहुँच चुकी थी, अब ब्रिटिश उद्योगों में तैयार माल को बेचता था।

→ अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अतिरिक्त अन्य अंग्रेजी कम्पनियों को भी भारत में व्यापार की छूट दी गई।

→ मुक्त व्यापार नीति के तहत करों को कम कर दिया गया लेकिन करों में दी गई यह छूट एकपक्षीय थी।

* भारत से इंग्लैण्ड जाने वाले कच्चे माल तथा इंग्लैण्ड से तैयार माल भारत आने पर कर नहीं लगाया जाता था लेकिन भारत से निर्मित सामान जो ब्रिटेन में निर्यात किया जाता था, उस पर अत्यधिक कर लगा दिए गए।

(iii) <u>वित्तीय साम्राज्यवाद</u> -

→ औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप इंग्लैण्ड व्यापारियों पर अत्यधिक धन जमा हो चुका था।

→ इंग्लैण्ड में उसके निवेश की सम्भावनाएँ समाप्त हो गई। अतः अंग्रेजी व्यापारियों को भारत में निवेश के लिए प्रोत्साहित किया गया।

→ लेकिन इस बात का ध्यान रखा गया कि यह निवेश ऐसे उद्योगों में होना चाहिए जो ब्रिटिश उद्योगों को टक्कर न दे।

→ अतः Railway, Banking, Insurance, चाय के बागान, नील की खेती में निवेश किया गया।

→ यह उद्योग ब्रिटिश उद्योगों के सहायक के रूप में उभरे।

→ रेलवे के विकास के कारण कच्चे माल को बन्दरगाह तक पहुँचाने तथा ब्रिटेन के तैयार सामान को बाजार तक पहुँचाने में सरलता हुई।